

---

# Shri Janaki Stotram

श्रीजानकीस्तोत्रम्

## Document Information

---

Text title : jAnakIstotram

File name : jAnakIstotram.itx

Category : devii, devI, otherforms

Location : doc\_devii

Transliterated by : Ganesh Kandu kanduganesh at gmail.com

Proofread by : Ganesh Kandu kanduganesh at gmail.com

Translated by : WebDunia

Latest update : November 18, 2018

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

November 22, 2022

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Shri Janaki Stotram

---

### श्रीजानकीस्तोत्रम्

---



नीलनीरञ्ज-दलायतेक्षाणां लक्ष्मणाग्रज-भुजावलम्बिनीम् ।  
शुद्धिमिद्धदलेने प्रदित्सतीं भावये मनसि रामवल्लभाम् ॥ १ ॥

जिनके नील कमल-दल के सदृश नेत्र हैं, जिनमें श्रीराम की भुजा  
का ही अवलंबन है, जो प्रज्वलित अग्नि में अपनी पवित्रता की परीक्षा देना  
चाहती हैं, उन रामप्रिया श्री सीता माता का मैं मन-ही-मन में ध्यान  
(भावना) करता हूँ । १

रामपाद-विनिवेशितेक्षाणामङ्ग-कान्तिपरिभूत-छाटकाम् ।  
ताटकारि-परुषोक्ति-विक्लवां भावये मनसि रामवल्लभाम् ॥ २ ॥

श्रीरामजु के चरणों की ओर निश्चल रूप से जिनके नेत्र लगे हुए हैं,  
जिनमें अपनी अङ्गकान्ति से सुवर्ण को मात कर दिया है । तथा ताटका  
के वैरी श्रीरामजु के (द्वारा दुष्टों के प्रति कहे गये) कटु वचनों से  
जो घबराह चुके हैं, उन श्रीरामजु की प्रेयसी श्री सीता मां की मन में  
भावना करता हूँ । २

कुन्तलाकुल-कपोलमाननं, राहुवङ्कग-सुधाकरधुतिम् ।  
वाससा पिदधतीं लियकुवां भावये मनसि रामवल्लभाम् ॥ ३ ॥

जो लज्जा से डरप्रभ हुए अपने उस मुख को, जिनके कपोल उनके बियुरे  
हुए बालों से उसी प्रकार आवृत हैं, जैसे चन्द्रमा राहु द्वारा असे  
जाने पर अंधकार से आवृत हो जाता है, वस्त्र से ढेक रही हैं,  
उन राम-पत्नी सीताजु का मन में ध्यान करता हूँ । ३

कायवाज्मनसगं यदि व्यधां स्वप्रजागृतिषु राघवेतरम् ।  
तद्दुःखमिति पावकं यती भावये मनसि रामवल्लभाम् ॥ ४ ॥

जो मन-ही-मन यह कहती हुई कि यदि मैंने श्रीरघुनाथ के अतिरिक्त  
किसी और को अपने शरीर, वाणी अथवा मन में कभी स्थान दिया हो तो वे

अग्ने ! मेरे शरीर को जला दो अग्नि में प्रवेश कर गछ, उन रामज्जु की  
प्राणप्रिय सीताज्जु का मन में ध्यान करता हूम् । ४

छन्दरुद्र-धनदाम्बुपालकैः सद्भिमान-गणमास्थितैर्वि ।  
पुष्पवर्ष-मनुसंस्तुताङ्घ्रिकं भावये मनसि रामवल्लभाम् ॥ ५ ॥

उत्तम विमानों में बैठे हुअे छन्द, रुद्र, कुबेर और वरुण द्वारा  
पुष्पवृष्टि के अनंतर जिनके चरणों की लली-लांति स्तुति की गछ है,  
उन श्रीराम की प्यारी पत्नी सीता माता की मन में भावना करता हूम् । ५

सञ्चयैर्विषयैः विमानैर्विस्मयाकुल-मनोऽभिवीक्षिताम् ।  
तेजसा पिदधती सदा दिशो भावये मनसि रामवल्लभाम् ॥ ६ ॥

(अग्नि-शुद्धि के समय) विमानों में बैठे हुअे देवगण विस्मयाविष्ट  
चित्त से जिनकी ओर देख रहे थे और जो अपने तेज से दसों दिशाओं को  
आच्छादित कर रही थीं, उन रामवल्लभा श्री सीता मां की मैं मन में  
भावना करता हूम् । ६

मान्यता है कि जो व्यक्ति प्रतिदिन प्रभु श्रीराम एवं माता सीता का  
विधि-विधान से पूजन करता है, उसे १६ मछान दानों का फल, पृथ्वी  
दान का फल तथा समस्त तीर्थों के दर्शन का फल मिल जाता है । इसके  
साथ ही जानकी स्तोत्र का पाठ नियमित करने से मनुष्य के सभी कष्टों  
का नाश होता है । इसके पाठ से माता सीता प्रसन्न होकर धन-औश्र्वर्य  
की प्राप्ति कराती है । ७

इति जानकीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

Encoded and proofread by Ganesh Kandu kanduganesh at gmail.com



Shri Janaki Stotram

pdf was typeset on November 22, 2022



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

